Toppersnotes
Unleash the topper in you

MP-TET

शिक्षक पात्रता परीक्षा

MADHYA PRADESH PROFESSIONAL EXAMINATION BOARD

उच्च प्राथमिक स्तर (कला वर्ग)

भाग – 2 (ब)

संस्कृत

SIERRA INNOVATIONS

संस्कृत व्याकरण और रचना

1.	वर्ण–प्रकरण	1
2.	संधि	2
3.	सुबन्त प्रकरण/तिङन्त प्रकरण	32
4.	वाच्य परिवर्तनम	51
5.	उपसर्ग	56
6.	प्रत्यय	58
7.	पर्यायवाची शब्द	63
8.	विलोम शब्द	65
9.	अव्यय प्रकरण	66
10.	समासः प्रकरण	69
11.	अपठित पद्यांश	77
12.	अपठित गद्यांश	80

Toppersnotes
Unleash the topper in you

वर्ण – प्रकरण

वर्ण – "वर्ण्यते अभिव्यज्यते वा लघुतमो ध्वनिः येन स वर्णः।"
"ध्वनि का वह लघुतम अंश, जो अखण्डित हो 'वर्ण' कहलाता है।"

जैसे – 'रामः शब्द में र्, आ, म्, अ और स्(ः) – ये पाँच वर्ण हैं इन पाँचो वर्णों में से किसी का टुकड़ा नहीं हो सकता है। ये अखंडित है।

संस्कृत – वर्णमाला में निम्नलिखित वर्ण होते हैं –

अ, आ, इ, ई, उ, ऊ ऋ ऌ ॠ ए ऐ ओ औ

क् ख् ग् घ् ङ्

च् छ् ज् झ् ञ्

ट् ठ् ड् ढ् ण्

त् थ् द् ध् न्

प् फ् ब् भ् म्

य् र् ल् व्

श् ष् स् ह्

अनुस्वार (ं)

विसर्ग (ः)

जिह्वामूलीय ᳵ क

उपध्मानीय ᳵ प

वर्णमाला ⇒

⇒ वर्णों के क्रमबद्ध समूह को वर्णमाला कहते है।

संस्कृत वर्णमाला में कुल 50 वर्ण है।

उपर्युक्त वर्णों को मूलतः दो वर्णों में विभक्त किया गया है।

① स्वर वर्ण (vowels) ② व्यंजन वर्ण (consonants)

स्वर वर्ण → "स्वयं राजन्ते इति स्वरा:"।
अर्थात् जो वर्ण स्वयं उच्चरित हो 'स्वर वर्ण या अच्' कहलाते हैं
इसके अन्तर्गत 'अ से औ' तक आते हैं इनकी सं० 13 होती है।

व्यंजन वर्ण → "व्यज्यते वर्णान्तर - संयोगेन द्योत्यते ध्वनिविशेषों येन तद् व्यंजनम्।"

अर्थात् जो वर्ण स्वयं उच्चरित न होकर स्वर की सहायता से वो 'व्यंजन वर्ण' या 'हल्' कहलाते हैं।
इसके अंतर्गत 33 वर्ण आते हैं — 'क् से ह् तक।

⇒ स्वर और व्यंजन वर्णों के अलावा 'अयोगवाह वर्णों का प्रयोग भी देखा जाता है इसके अन्तर्गत अनुस्वार, विसर्ग, जिह्वामूलीय और उपध्मानीय - ये चार वर्ण आते हैं।
प्रत्याहार सूत्रों में इनका प्रयोग नहीं है।

स्वर वर्ण तीन प्रकार के होते हैं —
ⓐ ह्रस्व स्वर
ⓑ दीर्घ स्वर
ⓒ प्लुत स्वर

ह्रस्व स्वर में अ, इ, उ, ऋ एवं लृ दीर्घ स्वर में आ, ई, ऊ, ॠ, ए, ऐ, ओ, औ आते हैं। प्लुत स्वरो को लिखने के लिये किसी दीर्घ स्वर के आगे ३ (तीन संख्या का चिन्ह) लिख दिया जाता है।

जैसे - आ ३, ई ३, ओ ३, मृ आदि।

→ उच्चारण काल को 'मात्रा' कहते हैं। इस आधार पर ह्रस्व एक, दीर्घ दो, प्लुत तीन, एवं व्यञ्जन वर्ण आधी मात्रा का होता है।

अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ॠ एवं ऌ को समान स्वर परन्तु ए, ऐ, ओ एवं औ को 'संध्य स्वर' (Dipthongs) कहते हैं। उक्त चारों वर्ण संधि के कारण बने हैं।

अ | आ + इ | ई = ए
अ | आ + इ | = ऐ
अ | आ + उ | ऊ = ओ
अ | आ + ओ = औ

Note - 'ए' एवं 'ओ' गुण के कारण तथा 'ऐ' एवं 'औ' वृद्धि के कारण बने हैं। इसकी विस्तृत चर्चा संधि में होगी।

स्वरों के तीन अन्य प्रकार भी हैं।

(a) उदात्त = तालु आदि के उच्च भाग में उच्चरित वर्ण।
(b) अनुदात्त = निम्न भाग से उच्चरित वर्ण
(c) स्वरित = मध्य भाग से उच्चरित वर्ण

व्यंजन वर्ण 5 वर्गों में विभक्त है और पाँचों 5-5 वर्ण आते हैं। जो वर्गीय या स्पर्श व्यंजन कहलाते हैं।

(a) क वर्ग - 'क्' से ङ्
(b) च वर्ग - च् से ञ्
(c) ट वर्ग - ट् से ण्
(d) त वर्ग - त् से न्
(e) प वर्ग - प् से म्

उक्त वर्णों के उच्चारण में जिह्वा (जीभ) का अग्र, मध्य और पश्च भाग का स्पर्श होता है।

⇒ स्पर्श एवं ऊष्म वर्णों के बीच में अवस्थित होने के कारण य, र, ल, व अन्तःस्थ व्यंजन कहलाते हैं। श, ष, स, ह को ऊष्म वर्ण कहते हैं क्योंकि इनके उच्चारण में मुँह से गर्म वायु निकलती है।

वर्णों के उच्चारण स्थान →

वर्णों के उच्चारण स्थान 7 हैं।

कण्ठ, तालु, मूर्धा, दन्त, ओष्ठ्य, नासिका, और जिह्वा-मूल।

⇒ उच्चारण स्थान के आधार पर निम्नलिखित प्रकार के वर्ण होते हैं।

(a) कण्ठ्य वर्ण (अकुहविसर्जनीयानां कण्ठः) → अ, आ, क वर्ग, ह और विसर्ग कण्ठ के उच्चरित होने के कारण 'कण्ठ्य वर्ण' कहलाते हैं।

(b) तालव्य वर्ण (इचुयशानां तालु) → इ, ई, च वर्ग, य और श तालु से उच्चरित होते हैं इसलिये ये तालव्य वर्ण हैं।

(c) मूर्धन्य वर्ण (ऋटुरषाणां मूर्धा) → ऋ, ॠ, ट वर्ग, र और ष - मूर्धन्य वर्ण हैं, क्योंकि इसका उच्चारण स्थान मूर्धा है।

(d) दन्त्य वर्ण (लृतुलसानां दन्ताः) → लृ, त वर्ग, ल और स - 'दन्त्य वर्ण' हैं क्योंकि इनका उच्चारण-स्थान दाँत है।

(e) ओष्ठ्य वर्ण (उपूपध्मानीयानामोष्ठौ) - उ, ऊ प वर्ग और उपध्मानीय वर्ण ओष्ठ से बोले जाने के कारण ओष्ठ्य वर्ण कहलाते हैं।

<u>नासिक्य वर्ण</u> (अमङणनानां नासिका च / नासिकानुस्वारस्य) :

ङ, ञ, ण, न, म और अनुस्वार नाक से उच्चरित होने के कारण 'नासिक्य वर्ण' कहलाते हैं।

<u>कण्ठतालव्य वर्ण</u> – (एदैतोः कण्ठतालु ~~कण्ठोष्ठम्~~) → ए और 'ऐ' का उच्चारण कंठ और तालु दोनो से होने के कारण ये 'कण्ठ तालव्य वर्ण' हैं।

<u>कण्ठोष्ठ्य वर्ण</u> – (ओदौतोः कण्ठोष्ठम्) → ओ और औ का उच्चारण – स्थान कण्ठ एवं ओष्ठ दोनो हैं। इसलिये ये दोनो वर्ण 'कण्ठोष्ठ्य' हैं।

<u>दन्तोष्ठ्य वर्ण</u> – (वकारस्य दन्तोष्ठम्) – 'व' का उच्चारण-स्थान दाँत और ओष्ठ है।

<u>जिह्वामूलीय वर्ण</u> – (जिह्वामूलीयस्य जिह्वामूलम्) – जिह्वामूलीय का उच्चारण स्थान जिह्वामूल है।

<u>वर्ण संयोजन एवं वियोजन</u> ⇒

स्वरो के दो रूप होते हैं –

1. मूल रूप   2. मात्रा रूप

जब व्यंजन वर्ण से स्वर मिलते हैं तब उनके मात्रा रूप लिखे जाते हैं।

व्यंजन	स्वर	व्यंजन (स्वरयुक्त)	स्वर चिन्ह (मात्रा रूप)
क्	अ	क	×
क्	आ	का	ा
क्	इ	कि	ि
क्	ई	की	ी
क्	उ	कु	ु
क्	ऊ	कू	ू
क्	ऋ	कृ	ृ
क्	ॠ	कॄ	ॄ
क्	ए	के	े
क्	ऐ	कै	ै
क्	ओ	को	ो
क्	औ	कौ	ौ

<u>Note</u> - 'अ' एवं 'ऌ' का मात्रारूप नहीं होता है। 'अ' ज्यों-का-त्यों व्यंजन वर्णों में तिरोहित हो जाता है जबकि 'ऌ' स्वतंत्र रूप से प्रयुक्त होता है।

ध्वनियों को मिलाकर शब्द/पद बनाना ही 'वर्ण-संयोजन' कहलाता है तथा शब्द या पदों में प्रयुक्त वर्णों को अलग-२ दिखाना वर्ण-वियोजन है।

यथा	वर्णवियोजन	वर्ण संयोजन
	अ ह् आ	अहा
	त् आ न् इ	तानि
	प् अ श् य् आ म् इ	पश्यामि

⇒ वर्ण - वियोजन को ही 'वर्ण विन्यास' कहा जाता है वर्ण-संयोजन - या वियोजन के लिये निम्न बातों पर ध्यान देना चाहिये

1) संयुक्त (व्यंजन) होने वाले वर्ण के बाद स्वर नहीं रहता।

क् + ष् + अ = क्ष

त् + र् + अ = त्र

ज् + ञ् + अ = ज्ञ

द् + य् + अ = द्य

श् + र् + अ = श्र

प् + र् + अ = प्र

द् + ध् + अ = द्ध

द् + द् + अ = द्द

भ् + र + अ = भ्र

उपर्युक्त संयुक्ताक्षर इसी रूप में लिखे जाते हैं।
अतएव वर्ण-विन्यास या संयोजन करते समय इन पर ध्यान देना अपेक्षित है।

<u>प्रत्याहार</u> " प्रत्याह्रियन्ते संक्षिप्यन्ते वर्णाः येनेति प्रत्याहारः।"
"जिस वर्ण से वर्ण- समुदाय संक्षिप्त कर दिये जाते हैं उस विधि का नाम 'प्रत्याहार' है।"

अधिक से अधिक या कुछ निश्चित वर्णों की उनके शुरू और अंतवाले केवल दो वर्णों के सहारे बता देने का नाम ही प्रत्याहार है।
इसे वर्ण संक्षेप के नाम से भी जाना जाता है।
व्याकरण के सूत्रों को प्रत्याहार के सहारे ही व्यक्त किया जाता है।
जैसे- यदि हम संस्कृत में स्वरों को अच् कहते हैं।

तो इसके अंतर्गत अ, इ, उ, ऋ, ऌ, ए, ऐ ओ और औ आदि वर्ण हैं। इसी तरह 'इक्' के अन्तर्गत इ, उ और ऋ वर्ण आते हैं।

इस प्रत्याहार-विधि का सर्वप्रथम प्रयोग भगवान शिव ने किया था- ऐसी मान्यता है परन्तु ऐसा कोई व्याकरण नहीं है। जिसे शिवप्रणीत माना जा सके। हाँ, 14 प्रत्याहार सूत्र अवश्य प्राप्त हैं, जिन्हे माहेश्वर-सूत्र या प्रत्याहार सूत्र के नाम से जाना जाता है। ये सूत्र निम्नलिखित हैं।

ⓐ अइउण्
ⓑ ऋऌक्
ⓒ एओङ्
ⓓ ऐऔच्
ⓔ हयवरट्
ⓕ लण्
ⓖ ञमङणनम्
ⓗ झभञ्
ⓘ घढधष्
ⓙ जबगडदश्
ⓚ खफछठथचटतव्
ⓛ कपय्
ⓜ शषसर्
ⓝ हल्

प्रत्याहार कैसे बनाये →

उदाहरण के लिये क्रम 'अक्' 'एच्' और 'कल्' होते हैं।
'अ.इ उ.ण्' का प्रथम अक्षर 'अ और 'ऋऌक्' का क' — ये दोनो मिलकर 'अक्' बने। इसके अन्तर्गत अ, इ, उ, ऋ और ऌ - ये 5 वर्ण आये।
इसी तरह से 'एओङ्' का 'ए' एवं 'ऐऔच्' का 'च्' मिलकर 'एच्' प्रत्याहार बना। 'एच्' के तहत ए, ओ, ऐ औ — ये चार वर्ण आए।
इसी प्रकार 'कल्' प्रत्याहार में क, प, श, ष, स और ह वर्ण आते हैं।

प्रत्याहार बनाने के लिये 14 सूत्रो में से प्रत्याहार के प्रथम वर्ण को ढूढना चाहिये।

फिर उसी सूची में से प्रत्याहार के अंतिम वर्ण को।
अब दोनों के बीच आने वाले तमाम वर्णों को लिखना चाहिये।
नीचे के उदाहरण से हम समझ सकते हैं —

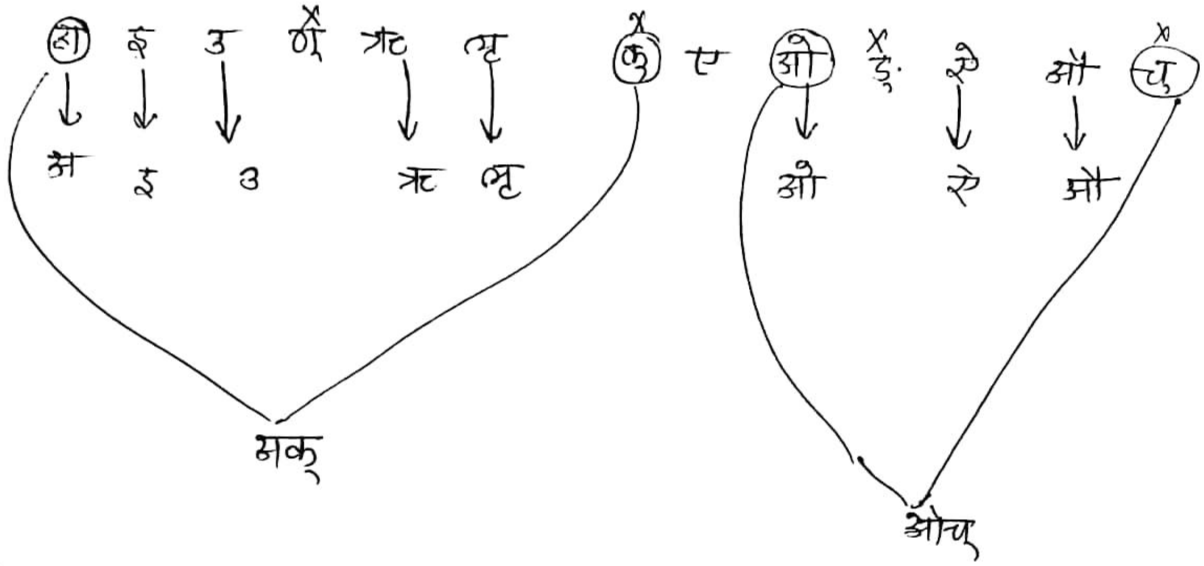

Note— प्रत्याहार के अंतर्गत आनेवाले वर्णों में हल् वर्ण की गणना नहीं की जाती है।

<u>कुछ प्रमुख प्रत्याहार</u>

अक् = अ इ उ ऋ ऌ

इक् = इ उ ऋ ऌ

ऐच् = ऐ औ

अच् = अ इ उ ऋ ऌ ए ऐ ओ औ

एङ् = ए ओ

चर् = च ट त क प श ष स

इसी तरह से अट्, अण्, जश्, हल् आदि प्रत्याहार बनेंगे।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

संधि

"वर्णानां परस्परं विकृतिमत् संधानं संधि।"

दो वर्णों में अति निकटता के कारण उनके मेल में जो विकार होता है उसे संधि कहते हैं।

जैसे – हिम + आलय।
म → अ, आ → आ
अ + आ → आ

हि + म् + अ + आ + लय।
हि + मा + लयः
→ हिमालय।

उपर्युक्त उदाहरण में 'म' में निहित स्वर 'अ' एवं 'आलय' का आद्य स्वर 'आ' – दोनों मिलकर आ बन जाते अर्थात इन दोनों में संधि हुयी है।

→ किसी पूर्ववर्ती शब्द के अंतिम वर्ण के साथ परवर्ती शब्द का आदि वर्ण मिलता है तब, वहिः संधि कही जाती है।

किसी प्रतिपादिक अथवा धातु के अंतिम वर्ण के साथ विभक्तियों के आद्यक्षर का जब मेल होता है तब उसे 'अंतः' सन्धि कहते हैं।

→ धातु, प्रत्यय और प्रत्ययान्त शब्दों को छोड़कर सभी सार्थक शब्दों को 'प्रतिपादिक' कहते हैं।
जैसे – देव, राजा आदि

"अर्थवद् धातुर् प्रत्ययः प्रातिपदिकम्।"

→ वहिं संधि तीन प्रकार की होती हैं।
1. स्वर (अच्) सन्धि 2. व्यंजन संधि 3. विसर्ग सन्धि

स्वर संधि (अच् संधि)

"स्वर वर्णों के साथ स्वर वर्ण के मेल से जो विकार हो उसे स्वर संधि कहते हैं।"

(स्वर वर्ण + स्वर वर्ण = विकार)

जैसे – महा + इन्द्रः = महेन्द्रः
आ + इ = ए

इस उदा० में आ + इ दो स्वरों का मेल हुआ है।

→ यह विकार आठ रूपों में दिखता है।

(a) दीर्घ (b) गुण (c) वृद्धि
(d) यण् (e) अयादि (f) पूर्वरूप
(g) पररूप (h) प्रकृतिभाव

इनके नियम एवं सूत्र इस प्रकार हैं —

1. अकः सवर्णे दीर्घः → दो परस्पर समान स्वर वाले चाहे ह्रस्व हो या दीर्घ, दोनो मिलकर दीर्घ हो जाते हैं।

जैसे —

अ/आ + अ/आ = आ

महा + आशयः = महाशयः (आ + आ) = आ

रत्न + आकरः = रत्नाकरः (अ + आ) = आ

इ/ई + इ/ई = ई

अति + इव = अतीव (इ + इ = ई)

मही + इन्द्रः = महीन्द्रः (ई + इ = ई)

Toppersnotes
Unleash the topper in you

उ/ऊ + उ/ऊ = ऊ

लघु + ऊर्मि: = लघूर्मि: (उ+ऊ = ऊ)

वधू + ऊहनम् = वधूहनम् (ऊ + ऊ = ऊ)

ऋ / ॠ + ऋ/ॠ = ॠ

पितृ + ऋणम् = पितॄणम् (ऋ + ऋ = ॠ)

(B) आदगुणः

(a) अ/आ के परे ह्रस्व 'इ' या दीर्घ 'ई' रहे तो दोनों मिलकर ए हो जाते हैं।

यानि अ/आ + इ/ई = ए

जैसे – देव + इन्द्र: = देवेन्द्र: (अ + इ = ए)

रमा + ईश: = रमेशः (आ + ई = ए)

(b) अ/आ के बाद उ/ऊ रहे तो दोनों मिलकर 'ओ' हो जाते हैं।

अर्थात् अ/आ + उ/ऊ = ओ

जैसे – नील + उत्पलम् = नीलोत्पलम् (अ + उ = ओ)

महा + उदय: = महोदय। (आ + उ = ओ)

गंगा + ऊर्मि: = गंगोर्मि। (आ + ऊ = ओ)

(c) अ/आ के बाद ऋ रहे तो दोनों 'अर्' हो जाता है। इसमे 'अ' पूर्व व्यंजन से मिल जाता है और र् अगले वर्ण पर 'रेफ' के रूप में प्रयुक्त होता है।

जैसे – महा + ऋषि: = महर्षि:

Toppersnotes
Unleash the topper in you

उदा०- महा + ऋषिः

(अस्वर व्यंजन) ह्   आ   ऋ = अर्

(स्वर निकाल लिया गया)

विच्छिन्न वर्ण → म + ह् + अर् + षि

'षि' पर रेफ

ह ('ह्' 'अ' से मिलकर स्वरयुक्त हो गया)

संधि पश्चात् रूप 'महर्षिः'

(c) <u>वृद्धिरेचि</u> → अ/आ के बाद ए/ऐ रहे तो दोनों मिलकर ऐ एवं ओ/औ रहे तो दोनों मिलकर 'औ' हो जाते हैं।

यानी, अ/आ + ए/ऐ = ऐ

अ/आ + ओ/औ = औ जैसे —

<u>जैसे</u> — अद्य + एव = अद्यैव/अद्यैव (अ + अ = ऐ)

मत + ऐक्य = मतैक्य (अ + ऐ = ऐ)

सदा + एव = सदैव (आ + ए = ऐ)

जल + ओघः = जलौघः (अ + ओ = औ)

सदा + औत्सुक्यम् = सदौत्सुक्यम् (आ + ओ = औ)

<u>अपवाद</u> — धातु का एकार या ओकार परे रहे तो उपसर्ग के अ/आ का लोप हो जाता है। 'ए' और 'ओ' उपसर्ग में मिल जाते हैं।

<u>जैसे</u> — प्र + एजते = प्रेजते

पुरा + ओहित = पुरोहित

परन्तु 'एध' / इण धातु के 'ए' परे रहने पर ऐसा नहीं होता

<u>जैसे</u> — उप + एधते = उपैधते

अव + एति = अवैति

Ⓓ इकोऽयणचि -

ⓐ यदि इ। ई के बाद कोई भिन्न स्वर रहे तो इ।ई का य् हो जाता है और 'य' पूर्व वर्ण से मिल जाता है।

यानी, इ।ई + भिन्न स्वर (इ।ई को छोड़ कोई स्वर)
↓
य्

जैसे -

अति + आचारः = इ + आ = या
↓
अत्याचारः

अति + उक्तिः = अभ्युक्तिः = इ + उ = यु

ⓑ यदि उ।ऊ के बाद भिन्न स्वर रहे तो उ।ऊ का व् हो जाता है और वह पूर्व वर्ण से मिल जाता है।

यानि उ।ऊ + भिन्न स्वर (उ, ऊ को छोड़कर कोई स्वर)
↓
व्

जैसे - सु + आगतम् = स्वागतम् (उ + आ = वा)

मधु + ऋते = मध्वृते (उ + ऋ = वृ)

Toppersnotes
Unleash the topper in you

(c) यदि 'ऋ' के बाद कोई भिन्न स्वर रहे तो 'ऋ' का 'र' हो जाता है और वह पूर्व के वर्ण से मिल जाता है। इसी तरह 'ऌ' के बाद भिन्न स्वर रहने पर 'ऌ' का 'ल्' हो जाता है।

यानी, ऋ / ऌ + भिन्न स्वर (ऋ / ऌ को छोड़कर कोई स्वर)
↓
र् + ल्

जैसे - मातृ + आनंदः = मात्रानंदः (ऋ + आ) = रा

ऌ + आकृतिः = लाकृतिः (ऌ + आ = ला)

(E) एचोऽयवायावः

(a) यदि 'ए' के बाद कोई स्वर हो तो 'ए' का 'अय्' हो जाता है। 'अकार' पूर्व वर्ण से और 'य्' आगे के वर्ण से मिल जाता है।

यानी, ए + अन्य स्वर (ए को छोड़कर)
↓
अय्

जैसे - ने + अनम् = नयनम् (ए + अ = य)

(b) ऐ के बाद कोई स्वर हो तो ऐ का 'आय्' हो जाता है ('आय्' का आकार पूर्व वर्ण से एवं 'य्' आगे वाले वर्ण से मिल जाता है।

यानी, ऐ + अन्य स्वर → आय्

जैसे - नै + अकः = नायकः (ऐ + अ = आय्)

विनै + अकः = विनायकः (ऐ + अ = आय्)